व्यासभारत के
भीमसेन ध्यान श्लोक

आदिपर्व 129.66c (श्लोकार्ध) | MM-KK-01-07-129-66c
कथावाचक: वैशम्पायन

मघे चन्द्रमसा युक्ते सिंहे चाभ्युदिते गुरौ ॥

अर्थ: चन्द्रमा मघा नक्षत्र से युक्त था और बृहस्पति सिंह राशि में उदित था।

आदिपर्व 129.67 | MM-KK-01-07-129-67
कथावाचक: वैशम्पायन

दिवा मध्यगते सूर्ये तिथौ पुण्ये त्रयोदशे ।
पित्र्ये मुहूर्ते सा कुन्ती सुषुवे भीममच्युतम् ॥

अर्थ: पुण्य त्रयोदशी तिथि को, दिन में सूर्य के मध्याह्न में स्थित होने पर, पितृमुहूर्त में कुन्ती ने अविचल भीम को जन्म दिया।

आदिपर्व 129.52 | MM-KK-01-07-129-52
कथावाचक: वैशम्पायन

तस्यां जज्ञे महावीर्यो भीमो भीमपराक्रमः ।
तमप्यतिबलं जातं वागुवाचाशरीरिणी ॥

अर्थ: कुन्ती से महावीर्य और भीषण पराक्रम वाले भीम उत्पन्न हुए। उस अतिबलवान शिशु के जन्म पर आकाशवाणी हुई।

आदिपर्व 129.55 | MM-KK-01-07-129-55
कथावाचक: वैशम्पायन

यथाऽनिलः समुद्धूतः समर्थः कम्पने भुवः ।
तथा ह्युपचिताङ्गो वै भीमो भीमपराक्रमः ॥

अर्थ: जैसे प्रचण्ड वायु पृथ्वी को कम्पित कर सकती है, वैसे ही भीम पुष्ट अंगों और भीषण पराक्रम से सम्पन्न हुए।

आदिपर्व 129.56 | MM-KK-01-07-129-56
कथावाचक: वैशम्पायन

इदं चाद्भुतमत्रासीज्जातमात्रे वृकोदरे ।
यदङ्कात्पतितो मातुः शिलां गात्रैरचूर्णयत् ॥

अर्थ: वृकोदर के जन्म लेते ही यह अद्भुत घटना हुई: माता की गोद से गिरकर उन्होंने अपने अंगों से शिला चूर कर दी।

आदिपर्व 129.62 | MM-KK-01-07-129-62
कथावाचक: वैशम्पायन

पर्वतस्योपरिस्थायामधस्तादपतच्छिशुः ।
स शिलां चूर्णयामास वज्रवद्वज्रिचोदितः ॥

अर्थ: पर्वत पर स्थित माता से वह शिशु नीचे गिरा और इन्द्र के छोड़े हुए वज्र की तरह उसने शिला चूर कर दी।

आदिपर्व 176.22 | MM-KK-01-10-176-022
वक्ता: कुन्ती

जातमात्रः पुरा चैव ममाङ्कात्पतितो गिरौ ।
शरीरगौरवादस्य शिला गात्रैर्विचूर्णिता ॥

अर्थ: जन्म लेते ही जब वह मेरी गोद से पर्वत पर गिरा, तब उसके शरीर के भार और अंगों की चोट से शिला चूर हो गई।

वनपर्व 148.32 | MM-KK-03-06-148-032
कथावाचक: वैशम्पायन

प्रियामनोरथं कर्तुमुद्यतश्चारुलोचनः ।
प्रांशुः कनकवर्णाभः सिंहसंहननो युवा ॥

अर्थ: प्रिया की इच्छा पूरी करने निकला वह युवक सुन्दर नेत्रों, ऊँचे कद, स्वर्ण जैसी कान्ति और सिंह जैसी सुदृढ़ देह वाला था।

वनपर्व 148.33 | MM-KK-03-06-148-033
कथावाचक: वैशम्पायन

मत्तवारणविक्रन्तो मत्तवारणवेगवान् ।
मत्तवारणताम्राक्षो मत्तवारणवारणः ॥

अर्थ: उनकी चाल और वेग मत्त हाथी जैसे थे; आँखें मत्त हाथी की तरह लाल थीं और वे मत्त हाथियों को भी रोक सकते थे।

वनपर्व 148.35 | MM-KK-03-06-148-035
कथावाचक: वैशम्पायन

नवावतारं रूपस्य विक्रीडन्निव पाण्डवः ।
चचार रमणीयेषु गन्धमादनसानुषु ॥

अर्थ: मानो सौन्दर्य का नया अवतार हों, वे पाण्डव क्रीड़ा करते हुए गन्धमादन के रमणीय शिखर-प्रदेशों में विचरते थे।

उद्योगपर्व 51.19 | MM-KK-05-05-051-019
वक्ता: धृतराष्ट्र

शूरस्तथाऽप्रतिबलो गौरस्ताल इवोन्नतः ।
प्रमाणतो भीमसेनः प्रादेशेनाधिकोऽर्जुनात् ॥

अर्थ: भीमसेन शूर, अतुलनीय बलवान, गौरवर्ण और ताड़ जैसे ऊँचे हैं; कद में अर्जुन से एक प्रादेश अधिक हैं।

उद्योगपर्व 51.20 | MM-KK-05-05-051-020
वक्ता: धृतराष्ट्र

जवेन वाजिनोऽत्येति बलेनात्येति कुञ्जरान् ।
अव्यक्तजल्पी मध्वक्षो मध्यमः पाण्डवो बली ॥

अर्थ: वे दौड़ में घोड़ों और बल में हाथियों से बढ़कर हैं। अस्पष्ट बोलने वाले, मधु जैसे नेत्रों वाले वे बलवान मध्यम पाण्डव हैं।

विराटपर्व 75.18 | MM-KK-04-05-075-018
वक्ता: उत्तर

अयं पुनर्मत्तगजेन्द्रगामी प्रतप्तचामीकरशुद्धगौरः ।
पृथ्वायतांसो गुरुदीर्घबाहुर्वृकोदरः पश्यत पश्यतैनम् ॥

अर्थ: इन वृकोदर को देखो: मत्त गजराज जैसी चाल, तपे सोने जैसा निर्मल गौरवर्ण, चौड़े कन्धे और भारी लम्बी भुजाएँ हैं।

आश्रमवासिकपर्व 27.6 | MM-KK-15-01-027-006
वक्ता: संजय

अयं पुनर्मत्तगजेन्द्रगामी प्रतप्तचामीकरशुद्धगौरः ।
पृथ्वायतांसः पृथुदीर्घबाहुर्वृकोदरः पश्यत पश्यतेमम् ॥

अर्थ: इन वृकोदर को देखो: मत्त गजराज जैसी चाल, तपे सोने जैसा निर्मल गौरवर्ण, चौड़े कन्धे तथा विशाल लम्बी भुजाएँ हैं।

आदिपर्व 207.6 | MM-KK-01-12-207-006
वक्ता: कुन्ती

अर्धं तु भीमाय च देहि भद्रे य एष नागर्षभतुल्यरूपः ।
गौरो युवा संहननोपपन्न एषो हि वीरो बहुभुक् सदैव ॥

अर्थ: भद्रे, आधा अन्न भीम को दो। वे गजराज जैसी आकृति, गौरवर्ण, यौवन और सुदृढ़ शरीर वाले वीर हैं तथा सदा अधिक भोजन करते हैं।

आदिपर्व 165.11 | MM-KK-01-09-165-011
वक्ता: भीमसेन

पश्य बाहू सुवृत्तौ मे हस्तिहस्तनिभाविमौ ।
ऊरू परिघसङ्काशौ संहतं चाप्युरो महत् ॥

अर्थ: हाथी की सूँड़ जैसी सुगोल मेरी इन भुजाओं, लोहे के परिघ जैसी जाँघों और सुदृढ़ विशाल वक्ष को देखो।

कर्णपर्व 40.26 | MM-KK-08-01-040-026
कथावाचक: संजय

महापरिघसङ्काशौ चन्दनागरुरूषितौ ।
अपश्यं भीमसेनस्य धनुर्विक्षिपतो भुजौ ॥

अर्थ: मैंने धनुष चलाते भीमसेन की भुजाएँ देखीं; वे विशाल लोहे के परिघों जैसी थीं और उन पर चन्दन तथा अगरु का लेप था।

कर्णपर्व 64.41 | MM-KK-08-01-064-041
कथावाचक: संजय

महाभुजगसङ्काशौ चन्दनागुरुरूषितौ ।
अपश्यं भीमसेनस्य धनुर्विक्षिपतो भुजौ ॥

अर्थ: मैंने धनुष चलाते भीमसेन की भुजाएँ देखीं; वे विशाल सर्पों जैसी थीं और उन पर चन्दन तथा अगरु का लेप था।

उद्योगपर्व 138.15 | MM-KK-05-06-138-015
वक्ता: भीष्म और द्रोण

सिंहस्कन्धोरुबाहुस्त्वां वृत्तायतमहाभुजः ।
परिष्वजतु बाहुभ्यां भीमः प्रहरतां वरः ॥

अर्थ: सिंह जैसे कन्धों, बलिष्ठ बाँहों और गोल लम्बी महाभुजाओं वाले योद्धाश्रेष्ठ भीम अपनी दोनों भुजाओं से तुम्हें आलिंगन करें।

उद्योगपर्व 126.15 | MM-KK-05-06-126-015
वक्ता: भीष्म और द्रोण

शालस्कन्धो महाबहुस्त्वां स्वजानो वृकोदरः ।
साम्नाऽभिवदतां चापि शान्तये भरतर्षभ ॥

अर्थ: हे भरतश्रेष्ठ, शाल-वृक्ष के तने जैसे कन्धों वाले महाबाहु वृकोदर तुम्हें आलिंगन करके शान्ति के लिए मधुर वचन कहें।

उद्योगपर्व 90.27 | MM-KK-05-06-090-027
वक्ता: कुन्ती

तं ममाचक्ष्व वार्ष्णेय कथमद्य वृकोदरः ।
आस्ते परिघबाहुः स मध्यमः पाण्डवो बली ॥

अर्थ: हे वार्ष्णेय, मुझे बताओ: लोहे के परिघ जैसी भुजाओं वाले बलवान मध्यम पाण्डव वृकोदर अब कैसे हैं?

उद्योगपर्व 90.26 | MM-KK-05-06-090-026
वक्ता: कुन्ती

तेजोराशिं महात्मानं वरिष्ठममितौजसम् ।
भीमं प्रदर्शनेनापि भीमसेनं जनार्दन ॥

अर्थ: हे जनार्दन, भीमसेन तेज की राशि, महात्मा, श्रेष्ठ और अपरिमित ओजस्वी हैं; उनका दर्शन भी भय उत्पन्न करता है।

सभापर्व 88.24 | MM-KK-02-07-088-024
वक्ता: युधिष्ठिर

यो नो नेता यो युधि नः प्रणेता यथा वज्री दानवशत्रुरेकः ।
तिर्यक्प्रेक्षी सन्नतभ्रूर्महात्मा सिंहस्कन्धो यश्च सदाऽत्यमर्षी ॥

अर्थ: वे हमारे नायक और युद्ध में अग्रणी हैं, दानवशत्रु इन्द्र के समान हैं; तिरछी दृष्टि, झुकी भौंहों और सिंह जैसे कन्धों वाले वे महात्मा अपमान कभी नहीं सहते।

द्रोणपर्व 156.46 | MM-KK-07-06-156-046
कथावाचक: संजय

ततो बले भृशलुलिते निशामुखे सुपूजितो नृपवृषभैर्वृकोदरः ।
महाबलः कमलविबुद्धलोचनो युधिष्ठिरं नृपतिमपूजयद्बली ॥

अर्थ: सन्ध्या में सेना के अत्यन्त व्याकुल होने पर, राजश्रेष्ठों से सम्मानित महाबली वृकोदर ने राजा युधिष्ठिर का सम्मान किया; उनके नेत्र खिले कमलों जैसे थे।

द्रोणपर्व 127.26 | MM-KK-07-05-127-026
कथावाचक: संजय

बद्धगोधाङ्गुलित्राणः प्रगृहीतशरासनः ।
ज्येष्ठेन प्रहितो भ्रात्रा भ्राता भ्रातुः प्रियङ्करः ॥

अर्थ: हाथ और उँगलियों की रक्षा के कवच बाँधकर, धनुष हाथ में लिए वे बड़े भाई के भेजने पर चले; वे अपने भाई को सदा प्रसन्न करने वाले अनुज थे।

भीष्मपर्व 25.15c (श्लोकार्ध) | MM-KK-06-03-025-015c
भीष्मपर्व 51.25c (श्लोकार्ध) | MM-KK-06-04-051-025c
कथावाचक: संजय

पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥

अर्थ: भीषण कर्म करने वाले वृकोदर ने पौण्ड्र नामक महाशंख बजाया।

द्रोणपर्व 23.92c (श्लोकार्ध) | MM-KK-07-02-023-092c
कथावाचक: संजय

वायव्यं भीमसेनस्य धनुर्दिव्यमभून्नृप ॥

अर्थ: हे राजन्, भीमसेन के दिव्य धनुष का नाम वायव्य था।

सभापर्व 3.22a (श्लोकार्ध) | MM-KK-02-01-003-022a
कथावाचक: वैशम्पायन

गदां च भीमसेनाय प्रवरां प्रददौ तदा ।

अर्थ: तब मय ने भीमसेन को श्रेष्ठ गदा प्रदान की।

विराटपर्व 42.9 | MM-KK-04-04-042-009
वक्ता: अर्जुन

बिन्दवश्चात्र सौवर्णाः पृष्ठे साधुनियोजिताः ।
विश्रुतं भीमसेनस्य जातरूपग्रहं दृढम् ॥

अर्थ: इस धनुष की पीठ पर स्वर्ण-बिन्दु सुन्दर ढंग से जड़े हैं; स्वर्ण-मुष्टि वाला यह दृढ़ धनुष भीमसेन का प्रसिद्ध धनुष है।

विराटपर्व 42.12 | MM-KK-04-04-042-012
वक्ता: अर्जुन

पूजितं सुरमर्त्येषु प्रथितं धनुरुत्तमम् ।
तालप्रमाणं भीमस्य रत्नरुक्मविभूषितम् ॥

अर्थ: देवताओं और मनुष्यों में पूजित यह प्रसिद्ध श्रेष्ठ धनुष भीम का है; इसका माप एक ताल है और यह रत्नों तथा स्वर्ण से विभूषित है।

विराटपर्व 42.15 | MM-KK-04-04-042-015
वक्ता: अर्जुन

विपाठा भीमसेनस्य गिरीणामपि दारणाः ।
सुप्रभाः सुमहाकायास्तीक्ष्णाग्राः सुतरां दृढाः ।
भीमेन प्रहिता ह्येते वारणानां निवारणाः ॥

अर्थ: ये भीमसेन के विपाठ बाण पर्वतों को भी विदीर्ण कर सकते हैं; ये चमकीले, विशाल, तीखे अग्रभाग वाले और अत्यन्त दृढ़ हैं। भीम के छोड़े हुए ये बाण हाथियों को रोकते हैं।

विराटपर्व 42.20 | MM-KK-04-04-042-020
वक्ता: अर्जुन

वैयाघ्रकोशो भीमस्य पञ्चशार्दूललक्षणः ।
वारणानां सुदृप्तानां शिक्षितः स्कन्धशातने ॥

अर्थ: व्याघ्रचर्म की म्यान और पाँच व्याघ्र-चिह्नों वाला यह खड्ग भीम का है; यह अत्यन्त मदोन्मत्त हाथियों के कन्धे काटने में समर्थ है।

विराटपर्व 42.24e (श्लोकार्ध) | MM-KK-04-04-042-024e
वक्ता: अर्जुन

भीमस्यायं महादण्डः सर्वामित्रविनाशनः ॥

अर्थ: समस्त शत्रुओं का विनाश करने वाला यह महादण्ड भीम का है।

द्रोणपर्व 108.38 | MM-KK-07-05-108-038
कथावाचक: संजय

ततः क्रोधाभिताम्राक्षो निर्दहन्निव पावकः ।
सन्दधे त्वाष्ट्रमस्त्रं स स्वयं त्वष्टेव मारुतिः ॥

अर्थ: क्रोध से लाल नेत्रों वाले, अग्नि की तरह दहकते मारुति भीम ने स्वयं त्वष्टा के समान त्वाष्ट्र अस्त्र का सन्धान किया।

कर्णपर्व 80.18 | MM-KK-08-01-080-018
वक्ता: विशोक

रथे तवास्मिन्निशिताः सुपीतास्ततो भल्ला द्वादश वै सहस्राः' ।
षण्मार्गणानामयुतानि वीर क्षुराश्च भल्लाश्च तथायुताख्याः ॥

अर्थ: तुम्हारे इस रथ में बारह हजार तीखे और भलीभाँति सान चढ़ाए भल्ल, साठ हजार मार्गण तथा दस हजार की संख्या वाले क्षुर और भल्ल भी हैं।

कर्णपर्व 80.19 | MM-KK-08-01-080-019
वक्ता: विशोक

नाराचानां द्वे सहस्रे च वीर त्रीण्येव च प्रदराणां स्म पार्थ ।
अस्त्यायुधं पाण्डवेयावशिष्टं न यद्वहेच्छकटं षड्गवीयम् ॥

अर्थ: हे वीर पार्थ, दो हजार नाराच और तीन हजार प्रदर हैं। इतनी आयुध-सामग्री अभी शेष है कि छह बैलों की गाड़ी भी उसे नहीं ढो सकती।

कर्णपर्व 80.20 | MM-KK-08-01-080-020
वक्ता: विशोक

एतद्विद्धन्मुञ्च सहस्रशोऽपि गदासिबाहुद्रविणं च तेऽस्ति ।
प्रासाश्च मुद्गराः शक्तयस्तोमराश्च माभैषीस्त्वं संक्षयादायुधानाम् ॥

अर्थ: यह जानकर हजारों बाण छोड़ो; तुम्हारे पास गदा, तलवार और बाहुबल की सम्पदा भी है। प्रास, मुद्गर, शक्ति और तोमर भी हैं; आयुध समाप्त होने का भय मत करो।

सभापर्व 25.26 | MM-KK-02-02-025-026
कथावाचक: वैशम्पायन

यः स सोदर्यवान्नाम द्वियोधी कृष्णसारथिः ।
अभ्यासघाती सन्दृश्यो दुर्जयः सर्वराजभिः ॥

अर्थ: उस रथ का नाम सोदर्यवान् है; उसमें दो योद्धा लड़ सकते हैं और कृष्ण उसके सारथि हैं। निकट प्रहार करने वाला वह दर्शनीय रथ समस्त राजाओं के लिए दुर्जेय है।

सभापर्व 25.27 | MM-KK-02-02-025-027
कथावाचक: वैशम्पायन

भीमार्जुनाभ्यां योधाभ्यामास्थितः कृष्णसारथिः ।
शुशुभे रथवर्योऽसौ दुर्जयः सर्वधन्विभिः ॥

अर्थ: भीम और अर्जुन, इन दोनों योद्धाओं से अधिष्ठित तथा कृष्ण को सारथि बनाए वह श्रेष्ठ रथ शोभित हुआ; वह सभी धनुर्धरों के लिए दुर्जेय था।

द्रोणपर्व 127.16 | MM-KK-07-05-127-016
कथावाचक: संजय

भीमसेनो महाबाहुः कवची शुभकुण्डली ।
सगदः सतलत्राणः सशरी रथिनां वरः ।
रथमारुह्य निर्युक्तं सर्वोपकरणान्वितम् ॥'

अर्थ: महाबाहु रथिश्रेष्ठ भीमसेन कवच, सुन्दर कुण्डल, गदा, हस्तरक्षक और बाणों से सुसज्जित होकर समस्त उपकरणों से युक्त तैयार रथ पर चढ़े।

द्रोणपर्व 127.29 | MM-KK-07-05-127-029
कथावाचक: संजय

तमूहुर्जवना दान्ता विरुवन्तो हयोत्तमाः ।
विशोकेन सुसंयत्ता मनोमारुतरंहसः ॥

अर्थ: विशोक के कुशल नियन्त्रण में, मन और वायु जैसे वेग वाले, प्रशिक्षित श्रेष्ठ घोड़े हिनहिनाते हुए भीम को तीव्र गति से ले चले।

आदिपर्व 137.16 | MM-KK-01-07-137-016
कथावाचक: वैशम्पायन

जवे लक्ष्याभिहरणे भोज्ये पांसुविकर्षणे ।
धार्तराष्ट्रान्भीमसेनः सर्वान्स परिमर्दति ॥

अर्थ: दौड़ने, लक्ष्य प्राप्त करने, खाने और धूल में खींचने के खेल में भीमसेन धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों को पीछे छोड़ देते थे।

आदिपर्व 137.20 | MM-KK-01-07-137-020
कथावाचक: वैशम्पायन

दश बालाञ्जले क्रीडन्भुजाभ्यां परिगृह्य सः ।
आस्ते स्म सलिले मग्नो मृतकल्पान्विमुञ्चति ॥

अर्थ: जलक्रीड़ा में वे दस बालकों को दोनों भुजाओं में पकड़कर पानी में डूबे रहते और उनके मरणासन्न होने पर उन्हें छोड़ते थे।

आदिपर्व 137.29 | MM-KK-01-07-137-029
कथावाचक: वैशम्पायन (दुर्योधन का मनोगत)

प्राणवान्विक्रमी चैव शौर्येण महताऽन्वितः ।
स्पर्धते चापि सहितानस्मानेको वृकोदरः ॥

अर्थ: वृकोदर प्राणबल, पराक्रम और महान शौर्य से सम्पन्न है; हम सब मिलकर भी उसका सामना करते हैं, फिर भी वह अकेला हमारी बराबरी करता है।

आदिपर्व 137.48 | MM-KK-01-07-137-048
कथावाचक: वैशम्पायन

तच्चापि भुक्त्वाऽजरयदविकारो वृकोदरः ।
विकारं नाभ्यजनयत्सुतीक्ष्णमपि तद्विषम् ॥

अर्थ: वृकोदर ने वह विष खाकर निर्विकार भाव से पचा लिया; अत्यन्त तीखा विष भी उनमें कोई विकार उत्पन्न न कर सका।

आदिपर्व 139.24 | MM-KK-01-07-139-024
वक्ता: नागगण

यत्ते पीतो महाबाहो रसोऽयं वीर्यसम्भृतः ।
तस्मान्नागायुतबलो रणेऽधृष्यो भविष्यसि ॥

अर्थ: हे महाबाहु, तुमने जो वीर्यसम्पन्न रस पिया है, उससे तुम दस हजार हाथियों के बल वाले और युद्ध में दुर्जेय हो जाओगे।

आदिपर्व 151.5 | MM-KK-01-07-151-005
कथावाचक: वैशम्पायन

असियुद्धे गदायुद्धे रथयुद्धे च पाण्डवः ।
सङ्कर्षणादशिक्षद्वै शश्वच्छिक्षां वृकोदरः ॥

अर्थ: पाण्डव वृकोदर ने संकर्षण से तलवार, गदा और रथयुद्ध की शिक्षा निरन्तर प्राप्त की।

आदिपर्व 151.6 | MM-KK-01-07-151-006
कथावाचक: वैशम्पायन

समाप्तशिक्षो भीमस्तु द्युमत्सेनसमो बले ।
पराक्रमेण सम्पन्नो भ्रातृणामचरद्वशे ॥

अर्थ: शिक्षा पूरी कर भीम बल में द्युमत्सेन के समान और पराक्रम से सम्पन्न हुए तथा अपने भाइयों के अधीन रहे।

आदिपर्व 151.51 | MM-KK-01-07-151-051
कथावाचक: वैशम्पायन

यः सर्वान्धृतराष्ट्रस्य पुत्रान्विप्रचकार ह ।
भीमसेनो महाबाहुर्बलाद्बलवतां वरः ॥

अर्थ: महाबाहु भीमसेन बलवानों में श्रेष्ठ थे; उन्होंने अपने बल से धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों को दबा रखा था।

आदिपर्व 160.26 | MM-KK-01-08-160-026
कथावाचक: वैशम्पायन

भीमसेनस्तु राजेन्द्र भीमवेगपराक्रमः ।
जगाम भ्रातृनादाय सर्वान्मातरमेव च ॥

अर्थ: हे राजेन्द्र, भीषण वेग और पराक्रम वाले भीमसेन सभी भाइयों और माता को साथ उठाकर चल पड़े।

आदिपर्व 160.27 | MM-KK-01-08-160-027
कथावाचक: वैशम्पायन

स्कन्धमारोप्य जननीं यमावङ्केन वीर्यवान् ।
पार्थौ गृहीत्वा पाणिभ्यां भ्रातरौ सुमहाबलः ॥

अर्थ: महाबली वीर भीम ने माता को कन्धे पर, दोनों जुड़वाँ भाइयों को गोद में और दोनों बड़े भाइयों को हाथों से पकड़ लिया।

आदिपर्व 160.28 | MM-KK-01-08-160-028
कथावाचक: वैशम्पायन

उरसा पादपान्भञ्जन्महीं पद्भ्यां विदारयन् ।
स जगामाशु तेजस्वी वातरंहा वृकोदरः ॥ ॥

अर्थ: तेजस्वी वृकोदर वायु के वेग से चले; वक्ष से वृक्ष तोड़ते और पैरों से पृथ्वी विदीर्ण करते गए।

आदिपर्व 165.12 | MM-KK-01-09-165-012
वक्ता: भीमसेन

विक्रमं मे यथेन्द्रस्य साऽद्य द्रक्ष्यसि शोभने ।
माऽवमंस्थाः पृथुश्रोणि मत्वा मामिह मानुषम् ॥

अर्थ: हे सुन्दरी, आज तुम इन्द्र के समान मेरा पराक्रम देखोगी। हे पृथुश्रोणि, मुझे साधारण मनुष्य समझकर तुच्छ मत मानो।

आदिपर्व 175.14 | MM-KK-01-09-175-014
वक्ता: कुन्ती

न चासौ राक्षसः शक्तो मम पुत्रविनाशने ।
वीर्यवान्मन्त्रसिद्धश्च तेजस्वी च सुतो मम ॥

अर्थ: वह राक्षस मेरे पुत्र का विनाश नहीं कर सकता; मेरा पुत्र वीर्यवान, मन्त्रसिद्ध और तेजस्वी है।

आदिपर्व 176.20 | MM-KK-01-10-176-020
वक्ता: कुन्ती

बाह्वोर्बलं हि भीमस्य नागायुतसमं महत् ।
येन यूयं गजप्रख्या निर्व्यूढा वारणावतात् ॥

अर्थ: भीम की दोनों भुजाओं का महान बल दस हजार हाथियों के समान है; उसी बल से वे तुम हाथियों जैसे भाइयों को वारणावत से निकाल लाए।

आदिपर्व 176.21 | MM-KK-01-10-176-021
वक्ता: कुन्ती

वृकोदरेण सदृशो बलेनान्यो न विद्यते ।
यो व्यतीयाद्युधि श्रेष्ठमपि वज्रधरं स्वयम् ॥

अर्थ: बल में वृकोदर के समान दूसरा कोई नहीं; वे युद्ध में स्वयं श्रेष्ठ वज्रधारी इन्द्र को भी पार कर सकते हैं।

आदिपर्व 204.18 | MM-KK-01-12-204-018
कथावाचक: वैशम्पायन

ततस्तु भीमोऽद्भुतभीमकर्मा महाबलो वज्रसमानसारः ।
उत्पाट्य दोर्भ्यां द्रुममेकवीरो निष्पत्रयामास यथा गजेन्द्रः ॥

अर्थ: अद्भुत भीषण कर्म करने वाले महाबली भीम वज्र जैसी दृढ़ता वाले हैं; उस अकेले वीर ने दोनों हाथों से वृक्ष उखाड़कर गजराज की तरह उसके पत्ते झाड़ दिए।

आदिपर्व 204.23 | MM-KK-01-12-204-023
वक्ता: श्रीकृष्ण

यस्त्वेष वृक्षं तरसाऽवभज्यराज्ञां निकारे सहसा प्रवृत्तः ।
वृकोदरान्नान्य इहैतदद्य कर्तुं समर्थः समरे पृथिव्याम् ॥

अर्थ: जिसने वेग से वृक्ष तोड़कर राजाओं को दबाना आरम्भ किया है, आज पृथ्वी पर युद्ध में वृकोदर के सिवा ऐसा करने में कोई समर्थ नहीं।

आदिपर्व 224.17 | MM-KK-01-14-224-017
वक्ता: विदुर

`भीमसेनो महाबाहुर्नागायुतबलो महान् ।
राक्षसानां भयकरो बाहुशाली महाबलः ॥

अर्थ: महाबाहु भीमसेन महान, दस हजार हाथियों के बल वाले, बलिष्ठ भुजाओं से सम्पन्न, महाबली और राक्षसों के लिए भयकारी हैं।

सभापर्व 20.6 | MM-KK-02-02-020-006
वक्ता: श्रीकृष्ण

अलं तस्य महाबाहुर्भीमसेनो महाबलः ।
लोकस्य समुदीर्णस्य निधनायान्तको यथा ॥

अर्थ: महाबाहु महाबली भीमसेन उसके लिए पर्याप्त हैं, जैसे प्रचण्ड हुए संसार के संहार के लिए यमराज।

सभापर्व 34.55 | MM-KK-02-03-034-055
वक्ता: घटोत्कच

तस्यानुजो महाबाहुर्भीमसेन इति श्रुतः ।
महातेजा महाकीर्तिः शक्रतुल्यपराक्रमः ॥

अर्थ: उनके छोटे भाई भीमसेन के नाम से प्रसिद्ध हैं; वे महाबाहु, महातेजस्वी, महाकीर्तिमान और इन्द्र के तुल्य पराक्रमी हैं।

वनपर्व 120.14 | MM-KK-03-06-120-014
वक्ता: बलराम

योऽयं परषां पृतनां समृद्धां निरायुधो दीर्घभुजो निहन्यात् ।
श्रुत्वैव शब्दं हि वृकोदरस्य मुञ्चन्ति सैन्यानि शकृत्समूत्रम् ॥

अर्थ: लम्बी भुजाओं वाले भीम बिना आयुध के भी शत्रुओं की विशाल सेना नष्ट कर सकते हैं; वृकोदर का शब्द सुनते ही सेनाएँ भय से मल-मूत्र त्याग देती हैं।

वनपर्व 120.15 | MM-KK-03-06-120-015
वक्ता: बलराम

स क्षुत्पिपासाध्वकृशस्तरस्वी समेत्य नानायुधबाणपाणिः ।
वने स्मरन्वासमिमं सुघोरं शेषं न कुर्यादिति निश्चितं मे ॥

अर्थ: भूख, प्यास और यात्रा से कृश हुए वे वेगवान वीर, अनेक आयुध और बाण लेकर भिड़ें तो इस भीषण वनवास को याद करके किसी शत्रु को शेष न छोड़ेंगे; मेरा यही निश्चय है।

वनपर्व 120.16 | MM-KK-03-06-120-016
वक्ता: बलराम

न ह्यस्य वीर्येण बलेन कश्चित्समः पृथिव्यामपि विद्यतेऽन्यः ।
स शीतवातातपकर्शिताङ्गो न शेषमाजावसुहृत्सु कुर्यात् ॥

अर्थ: पृथ्वी पर वीर्य और बल में उनका कोई दूसरा समान नहीं। शीत, वायु और धूप से पीड़ित अंगों वाले वे युद्ध में शत्रुओं में से किसी को जीवित न छोड़ेंगे।

वनपर्व 120.17 | MM-KK-03-06-120-017
वक्ता: बलराम

प्राच्यां नृपानेकरथेन जित्वा वृकोदरः सानुचरात्रणेषु ।
स्वस्त्यागमद्योऽतिरथस्तरस्वी सोयं वने क्लिश्यति चीरवासाः ॥

अर्थ: जो वेगवान अतिरथ वृकोदर पूर्व दिशा के राजाओं और उनके अनुचरों को अकेले रथ से युद्ध में जीतकर कुशल लौटे, वही आज चीर पहनकर वन में कष्ट भोग रहे हैं।

वनपर्व 148.15 | MM-KK-03-06-148-015
कथावाचक: वैशम्पायन

रुक्मपृष्ठं धनुर्गृह्य शरांश्चाशीविषोपमान् ।
मृगराडिव संक्रुद्धः प्रभिन्न इव कुञ्जरः ।
[ददृशुः सर्वभूतानि महाबाणधनुर्धरम् ॥

अर्थ: स्वर्ण-पृष्ठ धनुष और विषधर जैसे बाण धारण किए वे क्रुद्ध सिंह और मदोन्मत्त हाथी जैसे थे; सभी प्राणियों ने उन्हें विशाल धनुष-बाण धारण किए देखा।

वनपर्व 148.16 | MM-KK-03-06-148-016
कथावाचक: वैशम्पायन

न ग्लानिर्न च वैक्लब्यं न भयं न च संभ्रमः ।
कदाचिज्जुषते पार्थमात्मजं मातरिश्वनः ॥]

अर्थ: वायुदेव के पुत्र उस पार्थ को कभी थकावट, व्याकुलता, भय या घबराहट नहीं घेरती।

वनपर्व 148.17 | MM-KK-03-06-148-017
कथावाचक: वैशम्पायन

द्रौपद्याः प्रियमन्विच्छन्स बाहुबलमाश्रितः ।
व्यपेतभयसम्मोहः शैलमभ्यपतद्बली ॥

अर्थ: द्रौपदी की इच्छा पूरी करने के लिए अपने बाहुबल का आश्रय लेकर, भय और मोह से रहित बलवान भीम पर्वत की ओर बढ़े।

वनपर्व 148.31 | MM-KK-03-06-148-031
कथावाचक: वैशम्पायन

चालयानः स्ववेगेन लताजालान्यनेकशः ।
आक्रीडमानः कौन्तेयः श्रीमान्वायुसुतो ययौ ॥

अर्थ: अपने वेग से अनेक लता-समूहों को हिलाते हुए, क्रीड़ा करते-से श्रीमान वायुपुत्र कौन्तेय आगे बढ़े।

वनपर्व 148.39 | MM-KK-03-06-148-039
कथावाचक: वैशम्पायन

कथं नु कुसुमावाप्तिः स्याच्छीघ्रमिति चिन्तयन् ।
प्रतस्थे नरशार्दूलः पक्षिराडिव वेगितः ॥

अर्थ: फूल शीघ्र कैसे प्राप्त हों, यह सोचते हुए वे नरश्रेष्ठ पक्षिराज जैसे वेग से चले।

वनपर्व 148.41 | MM-KK-03-06-148-041
कथावाचक: वैशम्पायन

कम्पयन्मेदिनीं पद्भ्यां निर्घात इव पर्वसु ।
त्रासयन्गजयूथानि वातरंहा वृकोदरः ॥

अर्थ: वायु के वेग वाले वृकोदर ने पैरों से पृथ्वी कम्पित की और पर्व-सन्धियों पर वज्रपात जैसे आघात करते हुए हाथियों के झुण्डों को डरा दिया।

वनपर्व 148.42 | MM-KK-03-06-148-042
कथावाचक: वैशम्पायन

सिंहव्याघ्रमृगांश्चैव मर्दयानो महाबलः ।
उन्मूलयन्महावृक्षान्पोथयंश्चोरसा बली ॥

अर्थ: महाबली भीम सिंह, व्याघ्र और मृगों को कुचलते, बड़े वृक्ष उखाड़ते और वक्ष से उन्हें तोड़ते हुए चले।

वनपर्व 148.52 | MM-KK-03-06-148-052
कथावाचक: वैशम्पायन

ततो वायुसुतः क्रोधात्स्वबाहुबलमाश्रितः ।
गजेनान्यान्गजान्श्रीमान्सिंहं सिंहेन वा विभुः ।
तलप्रहारैरन्यांश्च व्यहनत्पाण्डवो बली ॥

अर्थ: तब क्रोध में अपने बाहुबल का आश्रय लेकर श्रीमान वायुपुत्र ने हाथी से अन्य हाथियों को, सिंह से सिंह को और हथेलियों के प्रहारों से दूसरों को मारा।

वनपर्व 148.56 | MM-KK-03-06-148-056
कथावाचक: वैशम्पायन

तमभ्यगच्छद्वेगेन क्षोभयिष्यन्महाबलः ।
महागज इवास्रावी प्रभञ्जन्विविधान्द्रुमान् ॥

अर्थ: महाबली भीम उस वन को क्षुब्ध करने के लिए वेग से बढ़े; मद बहाते विशाल हाथी की तरह अनेक वृक्ष तोड़ते गए।

वनपर्व 148.57 | MM-KK-03-06-148-057
कथावाचक: वैशम्पायन

उत्पाट्य कदलीस्तम्भान्बहुतालसमुच्छ्रयान् ।
चिक्षेप तरसा भीमः समन्ताद्बलिनां वरः ।
विमर्दन्सुमहातेजा नृसिंह इव दर्पितः ॥

अर्थ: बलवानों में श्रेष्ठ महातेजस्वी भीम ने अनेक ताड़-वृक्षों जितने ऊँचे केले के स्तम्भ उखाड़कर चारों ओर फेंके और गर्वित नृसिंह की तरह उन्हें कुचला।

वनपर्व 148.67 | MM-KK-03-06-148-067
कथावाचक: वैशम्पायन

तस्य शङ्खस्य शब्देन भीमसेनरवेण च ।
बाहुशब्देन चोग्रेण नदन्तीव गिरेर्गुहाः ॥

अर्थ: उस शंख के शब्द, भीमसेन की गर्जना और उनकी भुजाओं के प्रचण्ड शब्द से पर्वत की गुफाएँ भी मानो गर्जने लगीं।

वनपर्व 148.89 | MM-KK-03-06-148-089
कथावाचक: वैशम्पायन

सिंहनादं चकारोग्रं वज्राशनिसमं बली ।
तेन शब्देन भीमस्य वित्रेसुर्मृगपक्षिणः ॥

अर्थ: बलवान भीम ने वज्रपात जैसा उग्र सिंहनाद किया; उनके उस शब्द से पशु-पक्षी डर गए।

वनपर्व 156.18 | MM-KK-03-06-156-018
वक्ता: युधिष्ठिर

व्यक्तं दूरमितो भीमः प्रविष्ट इति मे मतिः ।
चिरं च तस्य कालोऽयं स च वायुसमो जवे ॥

अर्थ: मेरा मत है कि भीम यहाँ से बहुत दूर चले गए हैं; उन्हें निकले बहुत समय हो गया और उनका वेग वायु के समान है।

वनपर्व 156.19 | MM-KK-03-06-156-019
वक्ता: युधिष्ठिर

तरस्वी वैनतेयस्य सदृशो भुवि लङ्घने ।
उत्पतेदपिचाकाशं निपतेच्च यथेच्छकम् ॥

अर्थ: वे वेगवान हैं, पृथ्वी पर छलाँग लगाने में गरुड़ जैसे हैं; इच्छानुसार आकाश में उछल और नीचे उतर सकते हैं।

वनपर्व 180.29 | MM-KK-03-10-180-029
कथावाचक: वैशम्पायन

दशनागसहस्राणि धारयन्ति हि यद्बलम् ।
तद्बलं भीमसेनस्य भुजयोरसमं परैः ॥

अर्थ: दस हजार हाथियों में जितना बल होता है, उतना बल भीमसेन की भुजाओं में है; दूसरे उसकी बराबरी नहीं कर सकते।

विराटपर्व 27.42 | MM-KK-04-03-027-042
कथावाचक: वैशम्पायन

शतं पञ्चाधिकं भीमः प्राहिणोद्यमसादनम् ।
वृक्षेणैकेन राजेन्द्र प्रभञ्जनसुतो बली ।
वायुवेगसमः श्रीमान्सर्वान्सूतानशेषतः ॥

अर्थ: हे राजेन्द्र, श्रीमान बलवान वायुपुत्र भीम ने एक ही वृक्ष से एक सौ पाँच सूतों को यमलोक भेज दिया; उनका वेग वायु के समान था और उन्होंने किसी को शेष नहीं छोड़ा।

उद्योगपर्व 22.14 | MM-KK-05-02-022-014
वक्ता: धृतराष्ट्र

गदाभृतां नास्ति समोऽत्र भीमाद्धस्त्यारोहो नास्ति समश्च तस्य ।
रथेऽर्जुनादाहुरहीनमेनं बाह्वोर्बलेनायुतनागवीर्यम् ॥

अर्थ: गदाधारियों में भीम का कोई समान नहीं; हाथी पर युद्ध करने में भी उनका कोई समान नहीं। रथयुद्ध में उन्हें अर्जुन से कम नहीं कहते; उनके बाहुबल में दस हजार हाथियों का वीर्य है।

उद्योगपर्व 22.15 | MM-KK-05-02-022-015
वक्ता: धृतराष्ट्र

सुशिक्षितः कृतवैरस्तरस्वी दहेत्क्षुद्रांस्तरसा धार्तराष्ट्रान् ।
सदाऽत्यमर्षी न बलात्स शक्यो युद्धे जेतुं वासवेनापि साक्षात् ॥

अर्थ: वे सुशिक्षित, दृढ़ वैर वाले और वेगवान हैं; तुच्छ धृतराष्ट्र-पुत्रों को वेग से जला सकते हैं। सदा अपमान न सहने वाले उन्हें स्वयं इन्द्र भी युद्ध में बल से नहीं जीत सकते।

उद्योगपर्व 51.4 | MM-KK-05-05-051-004
वक्ता: धृतराष्ट्र

न हि तस्य महाबाहोः शक्रप्रतिमतेजसः ।
सैन्येऽस्मिन्प्रतिपश्यामि य एनं विषहेद्युधि ॥

अर्थ: उस महाबाहु, इन्द्र के समान तेजस्वी वीर का युद्ध में सामना कर सके, ऐसा कोई मुझे इस सेना में दिखाई नहीं देता।

उद्योगपर्व 51.7 | MM-KK-05-05-051-007
वक्ता: धृतराष्ट्र

उरुग्राहगृहीतानां गदां बिभ्रद्वृकोदरः ।
कुरूणामृषभो युद्धे दण्डपाणिरिवान्तकः ॥

अर्थ: गदा धारण करने वाले कुरुश्रेष्ठ वृकोदर की कठोर पकड़ में आए लोगों के लिए वे युद्ध में दण्डधारी यमराज के समान हैं।

उद्योगपर्व 51.13 | MM-KK-05-05-051-013
वक्ता: धृतराष्ट्र

ग्रसमानमनीकानि नरवारणवाजिनाम् ।
पश्यामीवाग्रतो भीमं क्रोधमूर्छितमाहवे ॥

अर्थ: मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों की सेनाओं को निगलते हुए, युद्ध में क्रोध से आविष्ट भीम को मानो मैं सामने ही देख रहा हूँ।

उद्योगपर्व 51.14 | MM-KK-05-05-051-014
वक्ता: धृतराष्ट्र

अस्त्रे द्रोणार्जुनसमं वायुवेगसमं जवे ।
महेश्वरसमं क्रोधे को हन्याद्भीममाहवे ॥

अर्थ: अस्त्रविद्या में द्रोण और अर्जुन के समान, गति में वायु के समान और क्रोध में महेश्वर के समान भीम को युद्ध में कौन मार सकता है?

उद्योगपर्व 51.16 | MM-KK-05-05-051-016
वक्ता: धृतराष्ट्र

येन भीमबला यक्षा राक्षसाश्च पुरा हताः ।
कथं तस्य रणे वेगं मानुषः प्रसहिष्यति ॥

अर्थ: जिसने पहले भीषण बल वाले यक्षों और राक्षसों को मारा है, उसके युद्धवेग को कोई मनुष्य कैसे सह सकेगा?

उद्योगपर्व 51.43 | MM-KK-05-05-051-043
वक्ता: धृतराष्ट्र

अविषह्यमनावार्यं तीव्रवेगपराक्रमम् ।
पश्यामीवातिताम्राक्षमापतन्तं वृकोदरम् ॥

अर्थ: असह्य, अनिवार्य, तीव्र वेग और पराक्रम वाले, अत्यन्त लाल नेत्रों से दौड़ते वृकोदर को मानो मैं देख रहा हूँ।

उद्योगपर्व 51.44 | MM-KK-05-05-051-044
वक्ता: धृतराष्ट्र

अगदस्याप्यधनुषो विरथस्य विवर्मणः ।
बाहुभ्यां युध्यमानस्य कस्तिष्ठेदग्रतः पुमान् ॥

अर्थ: गदा, धनुष, रथ और कवच के बिना भी, दोनों भुजाओं से युद्ध करते उनके सामने कौन पुरुष खड़ा रह सकता है?

उद्योगपर्व 75.9 | MM-KK-05-06-075-009
वक्ता: भीमसेन

अहमेते निगृह्णीयां बाहुभ्यां सचसाचरे ।
पश्यैतदन्तरं बाह्वोर्महापरिघयोरिव ॥

अर्थ: चर-अचर सहित इन पृथ्वी और आकाश को मैं दोनों भुजाओं से रोक सकता हूँ; विशाल लोहे के परिघ जैसी मेरी भुजाओं के बीच का यह अन्तर देखो।

उद्योगपर्व 75.17 | MM-KK-05-06-075-017
वक्ता: भीमसेन

द्रष्टा मां त्वं च लोकश्च विकर्षन्तं वरान्वरान् ।
न मे सीदन्ति गात्राणि न ममोद्वेपते मनः ॥

अर्थ: तुम और संसार मुझे श्रेष्ठ-श्रेष्ठ योद्धाओं को खींचते देखोगे; मेरे अंग शिथिल नहीं होते और मेरा मन विचलित नहीं होता।

उद्योगपर्व 76.3 | MM-KK-05-06-076-003
वक्ता: श्रीकृष्ण

यथा चात्मनि कल्याणं सम्भावयसि पाण्डव ।
सहस्रगुणमप्येतत्त्वयि सम्भावयाम्यहम् ॥

अर्थ: हे पाण्डव, तुम अपने भीतर जितने कल्याणकारी गुण मानते हो, मैं तुममें उससे भी हजार गुने अधिक मानता हूँ।

उद्योगपर्व 90.22 | MM-KK-05-06-090-022
वक्ता: कुन्ती

यः स नागायुतप्राणो वातरंहा महाबलः ।
सामर्षः पाण्डवो नित्यं प्रियो भ्रातुः प्रियङ्करः ॥

अर्थ: वे दस हजार हाथियों के प्राणबल, वायु के वेग और महान बल वाले हैं; अपमान न सहने वाले वे पाण्डव सदा बड़े भाई के प्रिय और उन्हें प्रसन्न करने वाले हैं।

उद्योगपर्व 90.23 | MM-KK-05-06-090-023
वक्ता: कुन्ती

कीचकस्य तु सज्ञातेर्यो हन्ता मधुसूदन ।
शूरः क्रोधवशानां च हिडिम्बस्य बकस्य च ॥

अर्थ: हे मधुसूदन, वे वीर कीचक को उसके बन्धुओं सहित, क्रोधवशों को तथा हिडिम्ब और बक को मारने वाले हैं।

उद्योगपर्व 90.24 | MM-KK-05-06-090-024
वक्ता: कुन्ती

पराक्रमे शक्रसमो मातरिश्वसमो बले ।
महेश्वरसमः क्रोधे भीमः प्रहरतां वरः ॥

अर्थ: भीम पराक्रम में इन्द्र, बल में वायु और क्रोध में महेश्वर के समान हैं; प्रहार करने वालों में श्रेष्ठ हैं।

द्रोणपर्व 10.14 | MM-KK-07-01-010-014
वक्ता: धृतराष्ट्र

महाकायो महोत्साहो नागायुतसमो बले ।
तं भीमसेनमायान्तं के शूराः पर्यवारयन् ॥

अर्थ: विशाल शरीर, महान उत्साह और दस हजार हाथियों के समान बल वाले भीमसेन को आते देखकर किन वीरों ने घेरा?

द्रोणपर्व 129.2 | MM-KK-07-05-129-002
वक्ता: धृतराष्ट्र

न हि पश्याम्यहं तं वै त्रिषु लोकेषु कञ्चन ।
क्रुद्धस्य भीमसेनस्य यस्तिष्ठेदग्रतो रणे ॥

अर्थ: तीनों लोकों में ऐसा कोई मुझे नहीं दिखाई देता जो क्रुद्ध भीमसेन के सामने युद्ध में खड़ा रह सके।

द्रोणपर्व 198.20 | MM-KK-07-08-198-020
वक्ता: भीमसेन

`मम नागायुतं पार्थ बलं बाह्वोर्विधीयते ।'
दारयेयं महीं क्रोधाद्विकिरेयं च पर्वतान् ॥

अर्थ: हे पार्थ, मेरी दोनों भुजाओं का बल दस हजार हाथियों के बराबर कहा जाता है; क्रोध से पृथ्वी फाड़ सकता हूँ और पर्वत बिखेर सकता हूँ।

द्रोणपर्व 198.21 | MM-KK-07-08-198-021
वक्ता: भीमसेन

आविध्यैतां गदां गुर्वीं भीमां काञ्चनमालिनीम् ।
गिरिप्रकाशान्क्षितिजान्भञ्जेयमनिलो यथा ॥

अर्थ: स्वर्णमालाओं से विभूषित इस भारी भीषण गदा को घुमाकर पर्वत जैसे वृक्षों को वायु की तरह तोड़ सकता हूँ।

द्रोणपर्व 200.53 | MM-KK-07-08-200-053
वक्ता: भीमसेन

न हि मे विक्रमे तुल्यः कश्चिदस्ति पुमानिह ।
यथैव सवितुस्तुल्यं ज्योतिरन्यन्न विद्यते ॥

अर्थ: जैसे सूर्य के समान दूसरा प्रकाश नहीं है, वैसे ही यहाँ पराक्रम में मेरे समान कोई पुरुष नहीं है।

द्रोणपर्व 200.54 | MM-KK-07-08-200-054
वक्ता: भीमसेन

पश्यतेमौ हि मे बाहू नागराजकरोपमौ ।
समर्थौ पर्वतस्यापि शैशिरस्य निपातने ॥

अर्थ: गजराज की सूँड़ जैसी मेरी इन दोनों भुजाओं को देखो; ये शैशिर पर्वत को भी गिराने में समर्थ हैं।

द्रोणपर्व 200.55 | MM-KK-07-08-200-055
वक्ता: भीमसेन

नागायुतसमप्राणो ह्यहमेको नरेष्विह ।
शक्रो यथाऽप्रतिद्वन्द्वो दिवि देवेषु विश्रुतः ॥

अर्थ: यहाँ मनुष्यों में अकेला मैं दस हजार हाथियों के प्राणबल वाला हूँ, जैसे स्वर्ग में देवताओं के बीच इन्द्र प्रतिद्वन्द्वीरहित प्रसिद्ध हैं।

द्रोणपर्व 201.113 | MM-KK-07-08-201-113
कथावाचक: संजय

तत्राद्भुतमपश्याम भीमसेनस्य विक्रमम् ।
बलं वीर्यं प्रभावं च व्यवसायं च भारत ॥

अर्थ: हे भारत, वहाँ हमने भीमसेन का अद्भुत पराक्रम, बल, वीर्य, प्रभाव और दृढ़ संकल्प देखा।

कर्णपर्व 81.25 | MM-KK-08-01-081-025
कथावाचक: संजय

स वायुवीर्यप्रतिमो वायुवेगसमो जवे ।
वायुवद्व्यचरद्भीमो वायुपुत्रः प्रतापवान् ॥

अर्थ: प्रतापी वायुपुत्र भीम वायु के समान वीर्य और गति वाले थे तथा वायु की तरह विचरते थे।

शल्यपर्व 4.14 | MM-KK-09-01-004-014
वक्ता: दुर्योधन

मध्यमः पाण्डवस्तीक्ष्णो भीमसेनो महाबलः ।
प्रतिज्ञातं च तेनोग्रं भज्येतापि न सन्नमेत् ॥

अर्थ: मध्यम पाण्डव भीमसेन तीक्ष्ण और महाबली हैं; उन्होंने उग्र प्रतिज्ञा की है। वे टूट सकते हैं, झुक नहीं सकते।

शल्यपर्व 33.21 | MM-KK-09-02-033-021
वक्ता: भीमसेन

सामरानपि लोकांस्त्रीन्नानाशस्त्रधरान्युधि ।
योधयेयं रणे कृष्ण किमुताद्य सुयोधनम् ॥

अर्थ: हे कृष्ण, अनेक शस्त्रधारी देवताओं सहित तीनों लोकों से भी युद्ध कर सकता हूँ; फिर आज सुयोधन से लड़ना कौन बड़ी बात है?

सौप्तिकपर्व 11.24 | MM-KK-10-02-011-024
वक्ता: द्रौपदी

न हि ते विक्रमे तुल्यः पुमानस्तीह कश्चन ।
श्रुतं तत्सर्वलोकेषु परमव्यसने तथा ॥

अर्थ: पराक्रम में तुम्हारे समान यहाँ दूसरा पुरुष नहीं है; यह सभी लोकों में और महान आपत्तियों के समय भी प्रसिद्ध है।

सौप्तिकपर्व 11.25 | MM-KK-10-02-011-025
वक्ता: द्रौपदी

द्वीपोऽभूस्त्वं हि पार्थानां नगरे वारणावते ।
हिडिम्बदर्शने चैव तथा त्वमभवो गतिः ॥

अर्थ: वारणावत नगर में तुम पाण्डवों के लिए रक्षाद्वीप बने थे; हिडिम्ब से सामना होने पर भी तुम ही आश्रय बने थे।

आदिपर्व 176.10 | MM-KK-01-10-176-010
वक्ता: युधिष्ठिर

यस्य बाहू समाश्रित्य सुखं सर्वे शयामहे ।
राज्यं चापहृतं क्षुद्रैराजिहीर्षामहे पुनः ॥

अर्थ: जिनकी भुजाओं का आश्रय लेकर हम सब सुख से सोते हैं और तुच्छ लोगों का छीना हुआ राज्य फिर प्राप्त करने की आशा रखते हैं, वे भीम हैं।

आदिपर्व 62.6 | MM-KK-01-06-062-006
वक्ता: जनमेजय

कथं नागायुतप्राणो बाहुशाली वृकोदरः ।
परिक्लिश्यन्नपि क्रोधं धृतवान्वै द्विजोत्तम ॥

अर्थ: हे द्विजश्रेष्ठ, दस हजार हाथियों के प्राणबल और बलिष्ठ भुजाओं वाले वृकोदर ने अत्यन्त पीड़ित होकर भी अपना क्रोध कैसे रोका?

आदिपर्व 137.25 | MM-KK-01-07-137-025
कथावाचक: वैशम्पायन

एवं स धार्तराष्ट्रांश्च स्पर्धमानो वृकोदरः ।
अप्रियेऽतिष्ठदत्यन्तं बाल्यान्न द्रोहचेतसा ॥

अर्थ: वृकोदर धृतराष्ट्र-पुत्रों से स्पर्धा करते हुए उनके लिए अत्यन्त अप्रिय हुए; यह बालस्वभाव के कारण था, द्रोहभाव से नहीं।

आदिपर्व 164.46 | MM-KK-01-09-164-046
वक्ता: भीमसेन

नाहं जीवितुमाशंसे भ्रातॄनुत्सृज्य राक्षसि ।
यथाश्रद्धं व्रजैका हि विप्रियं मे प्रभाषसे ॥

अर्थ: हे राक्षसी, भाइयों को छोड़कर मैं जीवित रहने की इच्छा नहीं करता। अपनी इच्छा से अकेली चली जाओ; तुम मुझसे अप्रिय बातें कह रही हो।

वनपर्व 155.20 | MM-KK-03-06-155-020
कथावाचक: वैशम्पायन

वातेन कुन्त्यां बलवान्सुजातःशूरस्तरस्वी द्विषतां निहन्ता ।
सत्ये च धर्मे च रतः सदैव पराक्रमे शत्रुभिरप्रधृष्यः ॥

अर्थ: वायु से कुन्ती में जन्मे वे बलवान, सुजात, शूर, वेगवान और शत्रुसंहारी हैं; सदा सत्य और धर्म में अनुरक्त तथा पराक्रम में शत्रुओं के लिए दुर्जेय हैं।

उद्योगपर्व 75.18 | MM-KK-05-06-075-018
वक्ता: भीमसेन

सर्वलोकादभिक्रुद्धान्न भयं विद्यते मम ।
किं तु सौहृदमेवैतत्कृपया मधुसूदन ।
सर्वांस्तितिक्षे सङ्क्लेशान्मा स्म नो भरता नशन् ॥ ॥

अर्थ: सारा संसार क्रुद्ध होकर सामने आ जाए तो भी मुझे भय नहीं है। हे मधुसूदन, यह मित्रभाव और करुणा के कारण है; हमारे भरतवंशी नष्ट न हों, इसलिए मैं सब कष्ट सहता हूँ।

उद्योगपर्व 90.25 | MM-KK-05-06-090-025
वक्ता: कुन्ती

क्रोधं बलममर्षं च यो निधाय परन्तपः ।
जितात्मा पाण्डवोऽमर्षी भ्रातुस्तिष्ठति शासने ॥

अर्थ: शत्रुदमन भीम क्रोध, बल और अमर्ष को रोककर, आत्मसंयमी होकर, अपमान न सहने पर भी बड़े भाई की आज्ञा में रहते हैं।
